ISBN: 978-93-90847-57-0

12. भारत में पर्यावरण पर जनसंख्या का प्रभाव

डॉ. राजेश मौर्य

सहा. प्रा. अर्थशास्त्र,
शास. नेहरू महा. वि. सबलगढ़,
जिला–मुरैना.

प्रो. जे. पी. मित्तल

प्राचार्य,
शास. नेहरू महा. वि. सबलगढ़,
जिला–मुरैना.

प्रस्तावना :

भू–वैज्ञानिकों तथा खगोल शास्त्रियों का कहना हैं कि पृथ्वी के 70: भाग पर पानी हैं तथा 30: भाग ही स्थल (भू–भाग) हैं। जिस पर प्राकृतिक संसाधनों (भूमि, हवा, मिट्टी, पेड़–पौधे) से लेकर विभिन्न प्रकार की गैसें (नाइट्रोजन, कार्बन डाय आक्सॉइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड) जलवायु या जलवायु परिवर्तन आदि का एक समूह विद्यमान हैं, जिसे हम पर्यावरण कहते हैं। इस पर्यावरण में मानव, विभिन्न प्रकार के जानवर व जीव–जन्तु पाये जाते हैं। पर्यावरण इनकी (मानव, जीव–जन्तु, जानवर) दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इनको अपने जीविकोपार्जन हेतु जिन आवश्यक वस्तुओं या संसाधनों (भोजन) की जरूरत होती हैं, वह उसे इसी से प्राप्त होती हैं, परन्तु मानव ने अपने स्वार्थ एवं लालच के कारण इस पर्यावरण को हानि या नुकसान पहुॅचाना आरंभ कर दिया हैं।

पर्यावरण को हानि पहुॅचाने में जिस कारक का सबसे अधिक योगदान रहा हैं, तो वह जनसंख्या हैं, जो कि दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। यदि हम वैश्विक दृष्टि से जनसंख्या का मूल्यॉकन करें तो यह प्राप्त होता हैं कि **वर्तमान में कुल वैश्विक जनसंख्या लगभग 7.6 बिलियन हैं और यह प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं।**[1] वैज्ञानिकों एवं जनसॉख्यिकीय विदो का कहना हैं कि यदि इसी तरह से जनसंख्या बढ़ती गयी तो यह **वर्ष 2025 तक 8 बिलियन, 2040 तक 9 बिलियन तथा 2100 तक 11 बिलियन पहुॅच जायेगा,**[2] जो कि पर्यावरण की दृष्टि से घातक हैं, क्योंकि बढ़ती हुयी जनसंख्या कई दृष्टियों जैसेः– ईधन हेतु वनों का विनाश, भोजन और वाहनों हेतु जीवश्म ईधन का उपयोग करना, मनुष्य द्वारा वाहनों के अत्यधिक उपयोग करने से वातावरण में अनावश्यक कार्बन की मात्रा का उत्सर्जन करना, जिससे वायु–प्रदूषण उत्पन्न होता हैं, मानव द्वारा अपने आर्थिक विकास हेतु पृथ्वी के भू–गर्भ से प्राकृतिक संसाधनों को निकालना इत्यादि कारणों से पर्यावरण को क्षति पहुॅच रही हैं।

भारत के संदर्भ में यह कहा जाता हैं कि यह दुनियॉ का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश हैं, जो कि दुनिया की कुल आबादी का **1.271 बिलियन अर्थात 17.5% का हिस्सा हैं।**[3] यह हिस्सा बहुत अधिक हैं, हालॉकि भारत की जनसंख्या एक समान रूप से नहीं बढ़ी हैं, वर्ष

1991 तक जनसंख्या अधिक थी, लेकिन 1991 के बाद वार्षिक वृद्धि दर में थोड़ी कमी दर्ज की गयी थी, लेकिन इसके बाद भारत की जनसंख्या बढ़ती गयी और **20वीं शताब्दी की शुरूआत तक यह बढ़कर 234.8 बिलियन के आसपास पहुॅच गयी हैं।**[4] भारत के संदर्भ में दिलचस्प बात यह हैं कि 20वीं सदी से पूर्व अगले 50 वर्षों में यह केवल डेढ़ गुना बढ़ी हैं, जबकि 20वीं सदी के बाद शेष 50वर्षों में इसमें 3 गुना वृद्धि हुयी हैं। यह ऑकड़े चौकाने वाले हैं, क्योंकि वर्तमान में जनसंख्या जिस गति से बढ़ रही हैं, उसे ध्यान में रखते हुये यह कहा जा सकता हैं कि भारत में जनसंख्या पर्यावरण को कही अधिक तेजी से हानि पहुॅचा रही हैं तथा जिससे प्राकृतिक संसाधनों भूमि, पानी, पेड़–पौधे, हवा आदि का क्षरण हो रहा हैं अर्थात शुद्ध दवा के स्थान पर दूषित हवा प्राप्त हो रही हैं, जो कि मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित नहीं हैं, क्योंकि प्रदूषित हवा मानव के लिये कई बीमारियों (श्वसन, सॉस संबंधी) का कारण बनती हैं, इसलिये पर्यावरण को बचाना या सुरक्षित बनाये रखना हम लोगों का महत्वपूर्ण कर्तव्य हैं।

अध्ययन के उद्देश्य : मैने भारत में पर्यावरण पर जनसंख्या का प्रभाव नामक शोध पत्र के लिये निम्नलिखित उद्देश्यों का चयन किया हैं।

- **भारत में जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को समझना।**
- **भारत में प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन के कारण पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों को समझना।**
- **भारत में शहरीकरण के विकास के कारण पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को समझना।**

अध्ययन की सामग्री : यह शोध पत्र पूर्ण रूप से द्वितीयक समंको पर आधारित हैं, जिसे पूर्ण करने के लिये मैने विभिन्न शोध पत्र, पत्रिकाओं, विभिन्न समाचार पत्रों तथा इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न वेबसाईटों से समंक एकत्रित करके किया हैं।

उपलब्ध साहित्य का अध्ययन : भारत में विशेष रूप से उत्तर–पूर्वी भारत में पर्यावरण, जनसंख्या तथा गरीबी पर बहुत अधिक संख्या में साहित्य उपलब्ध हैं, इसका कारण भारत के पड़ोसी देशों जैसेः– नेपाल तथा बंग्लादेश से बहुत बड़े पैमाने पर अपनी आजीविका व रोजगार हेतु जनसंख्या का आवागमन रहा हैं।

बी.के. जोशी (1990) ने अपने लेख ''गरीबी, असमानता और सामाजिक संरचना'' के तहत उत्तर–पूर्व भारत का अध्ययन किया और तर्क दिया कि : ''मेघालय जैसे राज्य में गरीबी और जनसंख्या वृद्धि ने राज्य की अर्थव्यवस्था के विकास एवं वृद्धि को प्रभावित किया हैं, क्योंकि इस राज्य में जनसंख्या वृद्धि की दर 2% प्रतिवर्ष से अधिक रही हैं, जिसके कारण राज्य की आर्थिक विकास की दर तथा लोगों का जीवन स्तर निम्न हैं अर्थात अभी तक सुधार नहीं हो सका हैं।''[5]

एम बैनर्जी (1994) ने अपने लेख मेघालय राज्य की जनसांख्यिकीय प्रोफाइल में तर्क दिया हैं कि : ''सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि तथा खाद्य आपूर्ति पर इसका प्रभाव, मानव जाति के लिये एक गंभीर खतरा हैं। यह भारत में भी बढ़ती हुयी जनसंख्या के कारण गरीबी, अल्प रोजगार व बेरोजगारी आदि मूल समस्याऐं हैं।''[6]

ए.के. सैन (1994) ने ''जनसंख्या और शोध : भोजन, उर्वरता तथा आर्थिक विकास'' नामक लेख में उल्लेख किया हैं कि : ''बढ़ती हुयी जनसंख्या कई समस्याऐं जैसे : लोगों का निम्न जीवन स्तर, भोजन संबंधी समस्या, मानव की खुशी आदि को जन्म देती हैं।''[7]

पी. दासगुप्ता, सी. फोल्क और के. जी. मेलर (Dasgupta. P, C. Folke and K.G. Maler, 1994) में अपले लेख ''पर्यावरण संसाधन और मानव कल्याण'' में उल्लेख किया हैं कि : ''पर्यावरण को प्रभावित करने वाले वनों के क्षरण और आर्थिक विकास के पीछे उपलब्ध संसाधनों की पहचान की और बताया कि वनों के क्षरण का मुख्य कारण गरीबी तथा फैशन हैं। उन्होंने तर्क दिया कि जब जनसंख्या का आकार उपलब्ध संसाधनों से अधिक हो जाता हैं तो जनसंख्या को नियंत्रित करने की आवश्यकता अधिक होती हैं।''[8]

के. सैनगुप्ता (1994) ने मेद्यालय राज्य का जनसंख्या और पर्यावरण के संबंध में अध्ययन किया तथा वर्णन किया कि : ''यदि मेद्यालय राज्य की जनसंख्या में वृद्धि होती हैं तो खाद्यान्न की समस्या हो सकती हैं, जिसे यह राज्य अन्य राज्यों से खाद्यान्न प्राप्त करके समस्या का हल निकाल सकता हैं। इसके अलावा मेद्यालय राज्य में बढ़ती हुयी जनसंख्या आर्थिक विकास और लोगों के जीवन स्तर को न्यूनतम कर सकता हैं। यह न्यूनतम जीवन स्तर लोगों की मुश्किले बढ़ा सकता हैं अर्थात लोगों को दैनिक जीवन के हर क्षेत्र में चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं।''[9]

एस. बाय पाटिल (2000) ने भारत के संदर्भ में विकासशील देशों में पर्यावरण तथा आर्थिक विकास के तहत अध्ययन करके यह प्रस्तुत किया कि : ''प्राकृतिक संसाधन न केवल वनो के प्रभावी संरक्षण के लिये आवश्यक हैं, बल्कि मानव की सुरक्षा तथा सुधार व राष्ट्रीय कल्याण के लिये भी महत्वपूर्ण हें।''[10]

एन. राजलक्ष्मी (2000) ने उल्लेख किया हैं कि : ''पर्यावरण और गरीबी पारस्परिक रूप से मजबूत प्रभावों से जनसंख्या वृद्धि की दर तेज हो सकती हैं। गरीब लोग पीड़ित तथा पर्यावरण क्षति के ऐजेंट हैं। प्रौद्योगिकी तथा संसाधनों की कमी के कारण, भूखे किसान, कटाव–प्रवण पहाड़ी किनारों पर खेती करने और उष्णकंटिबंधीय वन क्षेत्रों में जाने का सहारा लेते हैं, जहॉ साफ किये गये खेतों में फसल की पैदाबार आमतौर पर कुछ ही वर्षों के बाद तेजी से गिरती हैं।''[11]

उपरोक्त साहित्य का अध्ययन करने के बाद यह प्राप्त होता हैं कि विभिन्न लेखकों ने पर्यावरण हानि या क्षरण के लिये निम्न कारकों जैसे : जनसंख्या वृद्धि, गरीबी, आर्थिक विकास, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन आदि को जिम्मेदार माना हैं। इससे यह स्पष्ट होता हैं कि दिन–प्रतिदिन इन कारकों में होने वाली वृद्धि ही पर्यावरण क्षरण का मुख्य कारण हैं, जब तक इन कारकों पर नियंत्रण नहीं किया जाता, तब तक पर्यावरण को नुकसान या हानि होती रहेगी।

भारत में जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर पड़ने वाला प्रभाव : सम्पूर्ण विश्व में समय–समय पर आयोजित होने वाले संगोष्टियों, सम्मेलनों तथा सेमिनारो में इस विषय (जनसंख्या) पर विभिन्न लेखकों, सामाजिक–आर्थिक दार्शनिकों एवं अर्थशास्त्रियों के बीच बहस होती रही हैं कि किसी भी देश में होने वाली जनसंख्या वृद्धि किस प्रकार मानव जीवन के गुणवत्ता पूर्ण

जीवन स्तर, गरीबी और पर्यावरण को गंभीर रूप से प्रभावित कर रही हैं। जनसंख्या वृद्धि ने पृथ्वी पर अनावश्यक भार तो बढ़ाया ही हैं, इसके साथ–साथ उस देश के आर्थिक विकास को भी प्रभावित किया हैं। दिन–प्रतिदिन जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ती जा रही हैं, वैसे–वैसे कई समस्याऐं उत्पन्न होती जा रही हैं, जैसे–भोजन सबंधी समस्या, ईधन हेतु वनो का विनाश, दो पहिया या चार पहिया वाहनो के कारण उत्पन्न होने वाला कार्बन उत्सर्जन, जनसंख्या की अधिकता के कारण कृषि भूमि हेतु वनो का विनाश आदि। इसमें से जिस कारक ने सबसे अधिक पर्यावरण को नुकसान पहुॅचाया हैं, वह नयी कृषि भूमि हेतु जंगलों (वनो) को नष्ट करना रहा हैं। **सम्पूर्ण दुनियॉ में वनो की कटाई के लगभग 80% के लिये कृषि भूमि जिम्मेदार हैं।**[12] इसका केवल और केवल एक ही कारण हैं और वह हैं जनसंख्या वृद्धि, यह वृद्धि वैश्विक स्तर पर **वर्ष 2015 में 7.3 बिलियन से अधिक थी**[13] और यह अनुमान लगाया जा रहा हैं कि भविष्य में और अधिक बढ़ सकती हैं। **संयुक्त राष्ट्र का अनुमान हैं कि वर्ष 2050 तक विश्व की कुल आबादी 9.2 अरब तक पहुॅच जायेगी।**[14] इतनी अधिक जनसंख्या के लिये भोजन, पानी, भूमि (आवास हेतु) वायु, जीवाश्म ईधन और खनिजों जैसे संसाधनों की अधिक मात्रा में आवश्यकता होगी और इसकी पूर्ति हेतु कार्य भी किया जा रहा हैं, जिसका घातक प्रभाव पर्यावरण पर दृष्टिगोचर हो रहा हैं, हालॉकि पर्यावरण पर होने वाले हानिकारक प्रभावो को लेकर मानव चिंतित हैं। वह इस पर विचार विमर्श भी कर रहा हैं कि बढ़ती हुयी आबादी पर्यावरण से लेकर पारिस्थितिकी तंत्र तक के लिये तबाही का कारण भी बन सकती हैं, परन्तु आश्चर्य की बात यह हैं कि अभी तक हमने इस जनसंख्या वृद्धि को रोकने का सफल प्रयास नहीं किया हैं, हॉ यह जरूर हैं कि हमने इसके लिये कानूनों का निर्धारण कर रखा हैं, लेकिन उचित क्रियान्वयन के अभाव में अभी भी सफलता काफी दूर हैं। यह जनसंख्या वृद्धि विकसित एवं विकासशील दोनों देशों की समस्याऐं बनी हुयी हैं। हॉ, एक अन्तर जरूर हैं और वह हैं विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में जनसंख्या की वृद्धि कही अधिक तेजी से बढ़ना तथा ऐसी स्थिति एशिया महाद्वीप में स्थित भारत में सर्वाधिक हैं। भारत के संदर्भ में यह कहा जाता हैं कि इसके लिये यहॉ कई कारक जिम्मेदार हैं, जैसेः– गर्म जलवायु का पाया जाना, जो तीव्र गति से प्रजनन क्षमता को बढ़ाती हैं, अशिक्षा, परिवार नियोजन संबंधी कानूनों का कड़ाई से पालन न करना, अंध–विश्वास व रूढ़ियॉ, प्रथाऐं आदि हमारे देश मे यह ऐसे कारक रहे हैं, जो प्राचीन काल से आज तक विद्यमान हैं, हालॉकि वर्तमान में शिक्षा का विस्तार व प्रचार–प्रसार होने के कारण जनसंख्या वृद्धि की दर में थोड़ी बहुत गिरावट दर्ज की हैं, परन्तु फिर भी उस गति से कम नहीं हुयी हैं, जिसकी भारत को सख्त आवश्यकता हैं।

भारत में बढ़ती हुयी जनसंख्या ने पर्यावरण पर अनावश्यक भार बढ़ाकर उसकी प्रभावशीलता को कम कर दिया हैं अर्थात पर्यावरण के स्तर में गिरावट की स्थिति उत्पन्न कर दी हैं। **जैसा कि शॉ (1989), जोधा (1990), हर्टे (2007) ने स्पष्ट किया हैं कि –** "भारत जैसे विकासशील देश में बढ़ती हुयी आबादी और विकासात्मक गतिविधियों के कारण पर्यावरण की गिरावट तथा प्राकृतिक संसाधनों की कमी उक्त दोनों ही समस्याऐं उत्पन्न की हैं।"[15,16,17] देश में जैसे–जैसे जनसंख्या में वृद्धि हुयी वैसे–वैसे भोजन, भूमि (आवास, कृषि), ईधन (जीवाश्म ईधन), प्राकृतिक संसाधनो (खनिज, तेल, पानी) की अधिक मात्रा में आवश्यकता महसूस हुयी, जिसके परिणामस्वरूप लोगों ने अधिक मात्रा में निकालना शुरू कर दिया, जिससे पर्यावरण पर अनावश्यक भार के कारण क्षरण होने लगा। इस क्षरण के पीछे एक और कारक हैं और वह हैं मानव की विकासात्मक गतिविधियॉ, जिसके तहत उसने (मानव) तकनीकी एवं वैज्ञानिक

कौशल की मदद से उद्योग, परिवहन तथा अन्य व्यवसायों के लिये पृथ्वी के भू–गर्भ से अधिक मात्रा में प्राकृतिक संसाधनों को निकालना आरंभ कर दिया। यही ऐसे कारण हैं, जिससे पर्यावरण में असंतुलन की स्थितियॉ निर्मित होने से उसका क्षरण होना आरंभ हो गया हैं। यदि इसी प्रकार की प्रक्रिया चलती रही तो भविष्य में कई प्रकार के मानव से संबंधित घातक परिणाम दृष्टिगोचर होगें। **जैसा कि अलका गौतम (2007) ने स्पष्ट किया हैं कि –** "इस तरह से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने से पर्यावरणीय क्षय, गरीबी और इससे अधिक प्रदूषित दुनिया का हमें सामना करना पड़ सकता हैं।"[18] इसी प्रकार ग्लोबल 2000 की रिपोर्ट ने भी स्पष्ट किया हैं कि – **बढ़ती हुयी जनसंख्या के कारण पृथ्वी पर भीड़–भाड़ हो जायेगी, अभी हम जिस दुनियॉ में रह रहे हैं, वह कहीं अधिक प्रदूषित, पारिस्थितिकी तंत्र की दृष्टि से अधिक अशॉत एवं असुरक्षित हो जायेगी।"[19]**

पर्यावरण क्षरण की समस्याऐं भिन्न–भिन्न देशों में अलग–अलग रही हैं, जैसे **: अफ्रीका में पर्यावरणीय गिरावट का प्रमुख कारण प्राकृतिक संसाधनों की कमी रही हैं, इसीलिये वहॉ गरीबी का स्तर हैं,**[20] जबकि एशिया प्रशॉत क्षेत्र में तेजी से जनसंख्या वृद्धि और निरंतर आर्थिक विकास दोनो ंही पर्यावरण गिरावट के प्रमुख कारण माने जाते हैं।[21] इसी प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका की स्थिति हैं, जहॉ पर्यावरण के गिरावट का मुख्य कारण प्राकृतिक संसाधनों की प्रतिव्यक्ति खपत का अधिक होना और अत्यधिक उच्च कार्बन का उत्सर्जन होना हैं,[22] जबकि भारत जैसा विकासशील राष्ट्र अपनी जनसंख्या वृद्धि के कारण गरीबी, बेरोजगारी और पर्यावरणीय गिरावट जैसी गंभीर स्थितियों का सामना कर रहा हैं। भारत में इस प्रकार की स्थिति के लिये एक और कारक जिम्मेदार हैं तथा वह हैं, जनसंख्या घनत्व एक समान न होना अर्थात देश के विभिन्न क्षेत्रों एवं राज्यों में आर्थिक विकास एवं जनसंख्या वृद्धि में एक समान रूप से कमी न होना, जिससे भारत में क्षेत्रीय असमानता की स्थिति उत्पन्न हो गयी हैं। यहॉ क्षेत्रीय असमानता का मतलब हैं, देश के विभिन्न क्षेत्रो ंमें विकास एवं आबादी का एक समान मात्रा में न पाया जाना रहा हैं, जिसके कारण पर्यावरण असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गयी हैं। इसके लिये स्वंय भारतीय जिम्मेदार हैं, क्योंकि हम अपने तथा देश के आर्थिक विकास में इतना अधिक व्यस्त हो चुके हैं कि हमने पर्यावरण की स्थिति पर कोई ध्यान नहीं दिया। वर्तमान मे ंतो हम उच्च स्तर की प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के कारण व्यक्ति एकाकी जीवन यापन कर रहा हैं अर्थात एकाकी का मतलब स्वयं तथा स्वयं के परिवार के सदस्यों के साथ अपना जीवन व्यतीत करना हैं। उदाहरण के लियेः– वर्तमान में व्यक्ति सूचना व संचार प्रौद्योगिकी का तीव्र विकास होने से वह मोबाइल फोन, जो कि इंटरनेट आधारित प्रणाली से संचालित होता हैं, में इतना अधिक व्यस्त हो गया हैं कि उसे किसी और से लेना–देना नहीं हैं।

भारत के कुछ क्षेत्र व राज्य तो ऐसे हैं, जहॉ अधिक आबादी के कारण गरीबी का उच्च स्तर बना हुआ हैं। ऐसी स्थिति भारत के मध्य–पूर्वी और उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों में बनी हुयी हैं। **आर स्कॉट के अनुसार –** "भारत में मध्य पूर्वी क्षेत्रों में 40% तथा पूर्वी क्षेत्रों में 35% गरीबी का स्तर पाया जाता हैं, जिससे पानी, जंगल एवं भूमि (कृषि भूमि) जैसे प्राकृतिक संसाधनों का अधिक इस्तेमाल होने लगा हैं।"[23] इसके अलावा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की समस्या, अत्यधिक आबादी के कारण जीवन स्तर की गुणवत्ता संबंधी समस्या और सामाजिक–आर्थिक विकास का अपर्याप्त स्तर इत्यादि समस्याऐं भारत के लिये मुख्य चुनौतियॉ हैं।

भारत में पर्यावरणीय क्षरण के लिये अत्यधिक आबादी और गरीबी ही जिम्मेदार नहीं हैं, बल्कि आय के आधार पर निर्धारित किये गये लोगों का वर्ग भी जिम्मेदार हैं। हमारे देश में लोगों को आय अर्जन के आधार पर तीन वर्गो जैसे : गरीबी, मध्यम, उच्च आदि में बॉटा गया हैं। इसमें जो गरीब वर्ग हैं, उसके संबंध में ये कहा जाता हैं कि इनके पास पर्याप्त आय के अभाव में ये लोग सीधे जंगलों से लकड़ी एकत्रित करके खाना पकाना, वनों की भूमि का उपयोग अत्यधिक फसल हेतु कृषि कार्य में करना इत्यादि के कारण पर्यावरण का क्षय होता हैं और इसके लिये इस वर्ग को सबसे ज्यादा जिम्मेदार माना जाता हैं, जो कि पूर्णतया गलत हैं। वैज्ञानिकों तथा लेखकों ने यह स्पष्ट कर दिया हैं कि गरीब वर्ग की तुलना में मध्यम एवं उच्च वर्ग कही अधिक मात्रा में पर्यावरण के गिरावट के लिये जिम्मेदार हैं। उन्होंने यह बात इस प्रकार सिद्ध किया कि दो पहिया एवं चार पहियॉ वाहन सबसे अधिक इन (मध्यम, उच्च) वर्गो के पास हैं, जब वाहन अधिक होगें तो जीवाश्म ईधन अधिक इस्तेमाल होगा, जिससे पर्यावरण में कार्बन उत्सर्जन की मात्रा अधिक होगी, जो आगे पर्यावरण प्रदूषण को बढ़ायेगी। **के गणेश, जी मल्होत्रा और एस दासमिश्रा (2007) ने स्पष्ट किया हैं कि –** "भारत में मध्यम एवं उच्च वर्ग ने उपभोक्त वस्तुओं का व्यापक अधिग्रहण किया हैं।"[24] जिसके कारण पर्यावरण का क्षय हुआ हैं।

भारत के पास कुल वैश्विक भूमि का केवल 2.4% हिस्सा हैं, परन्तु कुल वैश्विक आबादी का 16.7% भाग हैं,[25] अर्थात भूमि की तुलना में जनसंख्या अधिक हैं, जिसके कारण पर्यावरण गिरावट की समस्या उत्पन्न हो रही हैं। इसके अलावा जनसंख्या घनत्व भी देश के विभिन्न राज्यों एवं हिस्सों में अलग–अलग हैं। वर्ष 2011 में जनसंख्या घनत्व उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों को छोड़कर शेष सभी क्षेत्रों में औसत 366 हैं, जबकि भारत का उत्तरी क्षेत्र, जिसमें देश की राजधानी नयी दिल्ली भी शामिल हैं, अन्य क्षेत्रों की तुलना मं जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक हैं। भारत के पूर्वी क्षेत्र, जो पहले से ही पिछड़े हुये हैं, समग्र जनसंख्या दवाब कही अधिक तीव्र हैं। दक्षिणी एवं पश्चिमी भाग भी अधिक जनसंख्या घनत्व को प्रलेखित करता हैं, लेकिन इसका स्थान पूर्वी क्षेत्र के बाद दूसरा हैं। पर्यावरण की दृष्टि से जनसंख्या घनत्व का ऑकलन इसलिये किया जाता हैं कि **कार्बन उत्सर्जन तथा संसाधन खपत में निरंतर रूप से वृद्धि होना जारी रहता हैं,**[26] और जनसंख्या भी सघनता के कारण प्रदूषण (वायु, जल, शोर) का स्तर कही अधिक घातक हो जाता हैं, जो मानव के स्वास्थ्य को तो प्रभावित करता ही हैं, इसके साथ–साथ यह पर्यावरण के स्तर को भी गिरा देता हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता हैं कि भारत में जो दिन–प्रतिदिन पर्यावरण का स्तर गिर रहा हैं, उसके लिये केवल बढ़ती हुयी जनसंख्या जिम्मेदार हैं, हालॉकि वर्तमान में सरकार के साथ–साथ शिक्षा का स्तर बढ़ने से लोगों में भी जागरूकता उत्पन्न हुयी हैं अर्थात अब अधिकॉश लोग यह समझने लगे हैं कि बढ़ती हुयी जनसंख्या न केवल देश के आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न कर रही हैं, बल्कि विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्याऐं जैसे – वायु, जल, शोर प्रदूषण और घातक गैसे, जहॉ तक कि ग्रीन हाउस गैसे जैसी समस्याऐं भी उत्पन्न कर सकती हैं, इसलिये हमें जनसंख्या को नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिये, तभी हम भविष्य की पीढ़ी के लिये एक स्वच्छ पर्यावरण दे पायेंगे।

प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन : एक मानव के लिये अपने जीवन स्तर को उच्च बनाये रखने तथा गुणवत्तापूर्ण जीवनयापन हेतु विकास, जिसमें सामाजिक–आर्थिक, दोनों

शामिल हैं, एक प्रमुख आवश्यकता हैं। आज के संदर्भ में हम देखते हैं कि सम्पूर्ण विश्व (विकसित, विकासशील) इस ओर सक्रिय रूप से संलग्न हैं और इसके लिये हमने एक नयी आर्थिक प्रणाली अर्थात वैश्विक अर्थव्यवस्था भी संचालित कर रखी हैं, जो आज सतत रूप से आर्थिक विकास के कार्यो में संलग्न हैं और इसके लिये हम दिन–प्रतिदिन प्राकृतिक संसाधनों का अधिक से अधिक दोहन कर रहे हैं, यह विकास निश्चित रूप से मानव और उसके जीवन यापन हेतु अत्यंत उपयोगी हैं, परन्तु जब हम इन प्राकृतिक संसाधनों को पर्यावरण की दृष्टि से देखते हैं तो यह बिल्कुल भी उचित नहीं हैं क्योंकि इसके कारण दिन–प्रतिदिन पर्यावरण का क्षरण हो रहा हैं। इसके लिये केवल विकास ही जिम्मेदार नहीं हैं, बल्कि जनसंख्या भी हैं। आज जिस तरह से जनसंख्या बढ़ रही हैं, उससे बड़े–बड़े शहरों का निर्माण हो रहा हैं, औद्योगिक विकास भी चरम स्तर पर हैं, कहीं–कहीं तो नवीन उद्योग व व्यावसायिक संगठन भी स्थापित हो रहे हैं, वैश्वीकरण के कारण भारत में आज अनेक बहु–राष्ट्रीय निगम स्थापित हैं, जो प्रतिदिन इन प्राकृतिक संसाधनों के दोहन में सतत रूप से संलग्न हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता हैं कि अत्यधिक जनसंख्या, शहरीकरण व औद्योगिकरण में वृद्धि अत्यधिक प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के लिये जिम्मेदार हैं। **जैसा कि लक्ष्मण और गणेश ने (2007) ने स्पष्ट किया हैं कि –** "प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के लिये शहरीकरण तथा जनसंख्या वृद्धि पूर्ण रूप से जिम्मेदार हैं, जिसके परिणामस्वरूप दुर्लभ संसाधनों और पर्यावरण प्रदूषण की समस्याऐं उत्पन्न हो गयी हैं।"[27,28]

अतः हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि प्राकृतिक संसाधनों का सर्वाधिक दोहन मानव क्यों कर रहा हैं? इसके पीछे कौन–कौन से कारण हैं और ये कारण किस प्रकार पर्यावरण के गिरावट के लिये जिम्मेदार हैं।

- **यातायात :** जैसे–जैसे मानव प्रगति करता जा रहा हैं, वैसे–वैसे उसके रहन–सहन का स्तर तथा जीवनयापन का तरीका बदलता जा रहा हैं, इसलिये वह पैदल चलने के स्थान पर आज दो पहिया या चार पहिया वाहन का इस्तेमाल कर रहा हैं। इसके पीछे एक और अन्य कारण धन समृद्धि भी हैं। जिसकी वजह से आज प्रत्येक व्यक्ति इन वाहनों का उपयोग करने में सक्षम हैं। इसने मनुष्य के इस व्यवहार को यात्रा व्यवहार में बदल दिया हैं। **रॉय चौधरी (2013) के अनुसार –** "यात्रा की मॉग में वृद्धि तथा यात्रा व्यवहार में परिवर्तन के कारण शहरी जनसंख्या तथा भौतिक आकार के मामलें बढ़ रहे हैं।"[29]

वर्ष 2001 के बाद भारतीय शहरों एवं महानगरों में 1000 लोगों पर वाहनों की संख्या में अधिक दर में वृद्धि हुयी हैं। दुपहिया एवं चार पहिया वाहन, जिनके धारक अधिकांशत व्यक्ति स्वयं हैं, 9.6% व 10.3% की दर से प्रतिवर्ष वृद्धि हुयी हैं। **के शर्मा एवं सैन (2011) के अनुसार –** "वर्ष 2011 की जनगणना के तहत भारत के 22 शहर ऐसे हैं, जहॉ पॅजीकृत वाहनों की संख्या में 8.7% की दर से वृद्धि हुयी हैं, जो कि देश के कुल वाहनों का लगभग 28% की हिस्सेदारी व्यक्त करती हैं।"[30] यही कारण हैं कि भारतीय सड़कों पर अनावश्यक कार्बन उत्सर्जन की मात्रा मे वृद्धि हो रही हैं, जिसने वायु प्रदूषण जैसी समस्या को उत्पन्न करके मानव स्वास्थ्य के स्तर को गंभीर रूप से प्रभावित किया हैं।

- **पानी की गुणवत्ता पर प्रभाव :** जब देश में जनसंख्या की वृद्धि का स्तर बढ़ जाता हैं, तो उनके लिये स्वच्छ पानी की व्यवस्था करना एक अहम समस्या उत्पन्न होती हैं। यही

स्थिति भारत की हैं। यहॉ स्वच्छ पानी की तुलना में अपशिष्ट जल का स्तर अधिक हैं। ऐसी स्थिति में इस जल को स्वच्छ एवं साफ जल के रूप में बदलकर जनता की प्यास संबंधी समस्या पूर्ण की जाती हैं, परन्तु फिर भी पानी की मॉग पूर्ण नहीं हो पाती हैं और जल–प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता हैं। हमारे देश में कुल अपशिष्ट जल 116 एल.पी.सी.डी. तथा 7007 एम.एल.डी. की दर से बढ़ गया हैं और ऐसा अनुमान लगाया जा रहा हैं कि भविष्य में इसका स्तर और भी बढ़ सकता हैं। **आर एम भारद्वाज (2005) ने यह अनुमान लगाया हैं कि वर्ष 2051 तक भारत में सकल अपशिष्ट जल का स्तर बढ़कर 120000 एम.एल.डी. हो जायेगा।**[31]

भारत में जब–प्रदूषण एक प्रमुख समस्या बनी हुयी हैं। हमारे यहॉ अत्यधिक जल का केवल 10% ही स्वच्छ करके लोगों तक पहुॅचाया जाता हैं। शेष जल (90%) नदियों में बहा दिया जाता हैं। जिसके परिणामस्वरूप **पृथ्वी के भू–जल से लेकर नदियॉ, तालाबों मे अपशिष्ट जल बहा दिया जाता हैं, जिससे ये जल निकाय प्रदूषित हो रहे हैं।**[32]

- **कचरा :** ऐसा माना जाता हैं कि जनसंख्या वृद्धि की दर अधिक होती हैं तो यह निश्चित हैं कि कचरा की मात्रा अधिक होगी। यह कचरा मानव द्वारा प्रतिदिन उपयोग की गयी वस्तुओं के इस्तेमाल से उत्पन्न होता हैं। जिसे एकत्रित करके उस क्षेत्र की नगर पालिका शहर से बाहर फेंक देती हैं। जिससे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो जाती हैं। एक अनुमान के अनुसार भारत में कचरे का उत्पादन 375 ग्राम/दिन और 14.9 मीट्रिक टन/वर्ष बढ़ गया हैं और भविष्य में इसमें कितनी वृद्धि होगी, यह कहना संभव नहीं हैं, क्योंकि जनसंख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ रही हैं। **डी. विज और कुमार के अनुसार –** "भारत में स्थित महानगरों/शहरों के बाहर अनियंत्रित रूप से कचरे की मात्रा में वृद्धि हो रही हैं, जिससे शहर के बाहरी क्षेत्रों में उसे नष्ट करने में समस्या हो रही हैं और गंभीर वायु प्रदूषण सृजित हो रहा हैं।"[33]
- **कृषि भूमि :** किसी भी देश में जैसे–जैसे जनसंख्या, महानगरों का विस्तार, औद्योगिकरण इत्यादि में वृद्धि होती रहती हैं, तो हमें एक नये बुनियादी ढॉचे की आवश्यकता महसूस होती हैं। भारत की भी ऐसी ही स्थिति हैं। यहॉ कृषि कार्य हेतु जितनी भी भूमि उपलब्ध हैं, उसे लोगों के आवास हेतु इस्तेमाल किया जा रहा हैं। **एस. फजल के अनुसार –** "अधिकॉश भारतीय शहरों में कृषि भूमि को लोगों के आवास हेतु उपभोग करने से पर्यावरण में असंतुलित वातावरण तथा अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हो गयी हैं।"[34]

इस प्रकार कहा जा सकता हैं कि प्राकृतिक संसाधनों का अधिक उपयोग पर्यावरण क्षरण का कारण बनता हैं।

शहरीकरण का विकास : औद्योगिकरण, रोजगार की तलाश, फैंशन, रहन–सहन का उच्च स्तर तथा विलासिता पूर्ण वस्तुओं का उपयोग करने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति आदि ऐसे कारण हैं, जिसकी वजह से लोगों ने शहरों में रहना आरंभ किया था। ये सब कारण न केवल विकसित देशों में बल्कि विकासशील देशों में भी शहरीकरण के लिये जिम्मेदार रहे हैं।

यदि हम वैश्विक स्तर पर शहरीकरण की आबादी का मूल्यॉकन करें तो हमें प्राप्त होता हैं कि **वर्ष 1960 तक एक तिहायी से भी कम आबादी शहरों में रहती थी।**[13] लेकिन जैसे–जैसे शहरों का विकास हुआ वैसे–वैसे यह आबादी बढ़ने लगी थी और **वर्ष 2014 तक यह ऑकड़ा पहुॅचकर 54% हो गया था।**[13] भविष्य में यह अनुमान लगाया जा रहा हैं कि वर्ष 2050 तक

यह आबादी बढ़कर 66% तक पहुॅच जायेगी। अतः स्पष्ट हैं कि शहरी क्षेत्रों में आबादी बढ़ने से पर्यावरणीय गिरावट की समस्याऐं सृजित हो रही हैं।

भारत के संदर्भ में शहरीकरण की आबादी के बारे मे यह कहा जाता हैं कि शहरीकरण का विकास अचानक नहीं हुआ बल्कि पारम्परिक ग्रामीण आधारित अर्थव्यवस्था से शहरी या औद्योगिक आधारित अर्थव्यवस्था के विकास के परिणामस्वरूप हुआ था अर्थात औद्योगिक, व्यावसायिक, व्यापारिक गतिविधियों में बदलाव के कारण ग्रामीण लोगों का पलायन शहरीकरण की ओर हुआ था। **के डेविस (1965) ने शहरीकरण को परम्परागत आधारित अर्थव्यवस्था से आधुनिक औद्योगिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया हैं,**[35] जबकि कुछ सामाजिक–आर्थिक दार्शनिक, लेखक एवं इतिहासकार शहरीकरण के विकास को फैशन, शहर के प्रति आकर्षण, जीवनयापन की उच्च शैली इत्यादि कारको को जिम्मेदार मानते हैं। उनका कहना हैं कि जब कोई ग्रामीण शहर में घूमने के लिये आता हैं, तो वह शहर की चकाचौद से प्रभावित हो जाता हैं और शहर की ओर अपना रूख कर देता हैं। शहरीकरण के संबंध में मेरा मानना यह हैं कि शहरो के विकास का एकमात्र कारण आर्थिक हैं, लोग ग्रामीण क्षेत्रों से काम धंधे या रोजगार की तलाश में आते हैं, क्योंकि शहरों में बहुत बड़े पैमाने पर उद्योग, व्यवसाय तथा व्यापारिक गतिविधियॉ संचालित रहती हैं, जिसे निरंतर रूप से चलायमान रखने हेतु व्यापक स्तर पर लोगों या श्रमिकों की आवश्यकता होती हैं इसीलिये ग्रामीण लोग शहरों की ओर अपना रूख करते हैं। **सन 1901 के ऑकड़ों के अनुसार – भारत में शहरी क्षेत्रों में निवासरत जनसंख्या का प्रतिशत 11.4 था, जो कि 2001 और 2011 में बढ़कर क्रमशः 28.53% एवं 30% तक पहुॅच गयी हैं।**[36] भारत में बढ़ती हुयी शहरी जनसंख्या के संबंध में विश्व बैंक का कहना हैं कि वर्ष 2050 तक भारत, इंडोनेशिया, चीन, नाइजीरिया तथा संयुक्त राज्य अमेरिका आदि ऐसे देश हैं, जो दुनिया को शहरी आबादी में सबसे अधिक योगदान देंगे।

भारतीय शहरों में यह आबादी एक साथ नहीं बढ़ी हैं बल्कि धीरे–धीरे शहरों के विकास के परिणामस्वरूप बढ़ी हैं। भारतीय जनगणना के ऑकड़ों से यह पता चलता हैं कि भारत में उदारीकरण के बाद शहरों में बहुत बड़े पैमाने पर ग्रामीणवासियों का प्रवाह देखा गया, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पर तो असर हुआ ही इसके साथ–साथ शहरों में जनसंख्या बढ़ने से पर्यावरण से संबंधित समस्याऐं जैसे वायु, जल प्रदूषण, जनसंख्या की सघनता अर्थात एक किमी. के दायरे में अधिक से अधिक जनसंख्या का एक साथ निवास करना जिससे स्वच्छ हवा की समस्या उत्पन्न हो जाती हैं, क्योंकि जनसंख्या की सघनता की वजह से प्रत्येक व्यक्ति तक स्वच्छ वायु नहीं पहुॅच पाती हैं। इसका सबसे अच्छा उदाहरण हम मलिन बस्तियों को ले सकते हैं, जहॉ पर एक किमी के दायरे में कई लोग रहते हैं। इस प्रकार की अधिकॉश मलिन बस्तियॉ मुम्बई में स्थित धारावी हैं, जिसे एशिया की सबसे बड़ी झोपड़ पट्टी कहते हैं। इसका निर्माण मुम्बई शहर के आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप हुआ हैं।

भारतीय शहरों में आज हम जिस गति से जनसंख्या वृद्धि को देख रहे हैं, वह सब ग्रामीण जनता का पलायन हैं, जो कि रोजगार की तलाश में शहरों की ओर रूख करते हैं। इसमें एक बड़ा हिस्सा उन लोगों का भी हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में वर्षों से गरीबी का जीवन यापन कर रहे हैं। **सैनगुप्ता (2005) के अनुसार –** "भारत के अधिकॉश गरीब लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं और कृषि कार्य मे संलग्न हैं,"[37] हालॉकि भारत सरकार ने गरीबी उन्मूलन योजनायें संचालित की हैं, परन्तु फिर भी गरीबी का अनुपात कम नहीं हुआ और ग्रामीण इलाकों में

दिन–प्रतिदिन बढ़ता गया। ऐसी स्थिति में इन लोगों ने शहरों की ओर पलायन किया और पर्यावरण प्रदूषण से लेकर मलिक बस्तियों के विस्तार में योगदान दिया।

भारत मे तेजी से बढ़ते हुये शहरीकरण, औद्योगिकरण के कारण कई समस्याओं को जन्म दिया। वायु, जल तथा शोर प्रदूषण शहरीकरण की ही देन हैं। शहरों में स्थित उद्योग या व्यावसायिक संगठन चिमनी के माध्यम से एक प्रकार का जहरीला धुँआ छोड़ते हैं, जो वातावरण में मिलकर अत्यधिक कार्बन, नाइट्रोजन ऑक्साईड, कार्बन मोनो ऑक्साईड तथा अन्य खतरनाक गैसों को जन्म देते हैं, जो मानव स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं। मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करने में वायु–प्रदूषण सबसे उच्च स्थान पर हैं, इसके कारण श्वसन या सॉस संबंधी बीमारी का खतरा बना रहता हैं। आज यह भारत की एक प्रमुख समस्या बन गयी हैं। जिसका ज्वलंत उदाहरण भारत की राजधानी कहा जाने वाला शहर/प्रदेश दिल्ली हैं।

भारत के शहरों में जो जनसंख्या वृद्धि हो रही हैं, वह मुख्य रूप से प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन का कारण बनती हैं, जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण में प्राकृतिक संसाधनों की कमी, जिसे हम दुर्लभ संसाधन भी कहते हैं, उत्पन्न हो जाती हैं और पर्यावरण का स्तर गिर जाता हैं, हालॉकि यह सत्य हैं कि मानव विकास हेतु आर्थिक विकास की प्रक्रिया सतत रूप से संचालित रहना चाहिये, जो कि शहरीकरण की एक प्रमुख विशेषता हैं, परन्तु इसका मतलब यह नहीं हैं कि हम पर्यावरण पर ध्यान दिये बगैर प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते जाये, क्योंकि ऐसा करने से **कार्बन डाय–ऑक्साईड, कार्बन उत्सर्जन और ग्लोबल वॉर्मिंग की समस्या उत्पन्न हो जाती हैं।**[38]

अतः आवश्यकता हैं कि पर्यावरण को बचाने तथा संरक्षित बनाये रखने के लिये जनसंख्या को नियंत्रित करना अति आवश्यक हैं, क्योंकि पर्यावरणीय गिरावट या क्षरण के लिये केवल और केवल बढ़ती हुयी जनसंख्या ही जिम्मेदार हैं।

निष्कर्ष : विश्व के विभिन्न दार्शनिको तथा अर्थशास्त्रियों के बीच यह बहस का मुददा बना रहा हैं कि किसी भी देश मे बढ़ती हुयी जनसंख्या किस प्रकार उस देश की अर्थव्यवस्था को लेकर पर्यावरणीय मुददों तक को गंभीर रूप से प्रभावित कर देती हैं। यह बेरोजगारी, आय की असमानता, गरीबी जैसे आर्थिक मुददों के लिये तो जिम्मेदार होती ही हैं, इसके अलावा आज यह पर्यावरण से संबंधित अनेक मुददों या समस्याओं के लिये जिम्मेदार बनी हुयी हैं। वायु प्रदूषण से लेकर जल, शोर प्रदूषण तक जनसंख्या ही जिम्मेदार हैं। इसके अतिरिक्त पर्यावरण प्रदूषण से संबंधित एक और मुददा उभरकार आया हैं और वह हैं प्लास्टिक कचरा या अपशिष्ट, जो कि वर्तमान की एक मुख्य समस्या बनी हुयी हैं, क्योंकि ये अपशिष्ट (प्लास्टिक) इसलिये भी खतरनाक हैं कि इसे नष्ट करना मुश्किल हैं। आज यह कचरा नालियों में एकत्रित होकर उसे जाम कर रहा हैं, जिससे गंदा पानी नालियों के ऊपर आकर मानव को विभिन्न प्रकार की बीमारियों से ग्रसित कर रहा हैं, यह सब बढ़ती हुयी आबादी एवं विकास प्रक्रिया का परिणाम हैं, अतः आवश्यकता हैं कि किसी भी तरह से बढ़ती हुयी आबादी को रोका जाये, तभी पर्यावरण हमारे और हमारे भविष्य के लिये सुरक्षित बच पायेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. US Census Bureau. "US Census Bureau Estimates 7.58 Billion people on Earth on World Population Day". Accessed Feb. 5, 2012.
2. United Nations. "World Total Population." Accessed Feb. 5, 2021.
3. Dinesh Koushik (December 2015) "Growth of Population in India and Its Impact on Natural Resources." PARIPEX – Indian Journal of Research, Volume: 4, Issue 1-12, December 2015.
4. Ibid
5. Joshi, B.K. (1990) "Poverty, Inequality and Social Structure," in Tarlak Singh (Ed), Social Science Research and Problem of Poverty, Concept Publishing Company, New Delhi, P. 147.
6. Banerjee, M (1994) "Demographic Profile of Meghalaya," in Sanu Mukharjee et al (Eds), Demographic Profile of North East India, Omsons Publications, New Delhi, pp. 45-51.
7. Sen, A.K. (1994) "Population and Research: Food, Fertility and Economic Development," in Lindahl-Kiessling, K and H Landbery (Eds), Population, Economic Development and Environment, Oxford University Press, PP. 51-74.
8. Dasgupta, P., C Folke and K.G. Maler (1994):- "The Environmental Resource Base and Human Welfare" in Lindahl-Kiessling, K and H. Landberg (Eds), Population, Economic Development and Environment, Oxford University Press, PP. 25-50.
9. Sengupta, K (1994) "The menac of Population Growth:- A Case Study of meghalaya," in Sanu Mukherjee, et al (Eds), Demographic Profile in North East India, Omsons Publication, New Delhi, PP. 40-44.
10. Patil, S.Y. (2000) "Dynamic Approach towards Environment and Development in Developing Economics: An Indian Scenario," in N. Rajalakshi (Ed), Environment and Economic Development, Namak Publication, New Delhi, PP. 142-160.
11. Rajalakshmi, N (2000) – "Population Externaities and Resource Conservation Strategies: A Macro Approach," in N Rajalakshmi (Ed), Environment and Economic Development, Manak Publication, New Delhi, PP. 199-226.
12. Gov. UK, "Drivers of Deforestation and Forest Degradation: A Synthesis Report for REDD Policymakers." Page 5. Accessed Feb. 5, 2021.
13. Population and Environment: A global challenge (www.science.org.au) By: Prof. Ctephen Dovers and Colin Butter.
14. Ibid
15. Shaw RP (1989) Rapid Population growth and environmental degradation: Ultimato versus proximate factors, Environconserv. 16:199-208.
16. Jodha NS (1990) Depletion of Common Property Resources in India: Micro level evidence. Popul Dev Rev. 15:261-284.
17. Harte J (2007) Human Population as a dynamic factor in environmental degradation popul Environ. 28: 223-236
18. Gautam Alka (2007) – "Environmental Geography, Sharda Pustak Bhawan, Allahabad.
19. Dinesh Kaushik (December 2015) "Growth of Population in India and Its Impact on Natural Resources." PARIPEX – Indian Journal of Research, Vol. 4, Issue 12, December 2015.
20. Kalipeni E (1992) Population Growth and Environmental degradation in Malawi. Africa Insight. (Internet). (Cited 2007 Aug. 17). 22: 273-382. Available from: https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pubmed.

21. Dewaram AN (2007) Population Growth and environmental degradation in India. Asia Pac J Environ Dev. 14: 41-63.
22. United Nations (1997) Glossary of environment statistics in method series F. 67. New York (NY) United Nations.
23. Scott R, Huang JK, Zhang LX. (1997) Poverty, Population and environmental degradation in China. Elsevier Sci. 22: 229-251.
24. Ganesh K, Malhotra G, Dasmishra M (2007) Economic development and environment degradation in India. Man Dev. 29: 55-70.
25. James KS (2011) India's demographic change: Opportunities and Challenges. Sci J. 333: 576-580.
26. Moran DD, Wackernagel M, Kitzes JA, Goldfinger SH, Boutaud A. (2008) Measuring Sustainable development-nation by nation. Ecological Econ. 64: 470-474.
27. Ganesh K, Malhotra G, Das Mishra M (2007) Economic development and environmental degradation in India. Man Dev. 29: 55-70.
28. Lakshmana, CM (2008) Effect of Population Growth on environmental degradation: With reference to India. Demography India, 37(1), PP. 63-79.
29. Roy Chowdhury, A (2013) Good News and Bad News: Clearing the Air in Indian Cities, Centre for Science and Environment.
30. Sarma, K. Sen et al (2011) Road Transport Year Book (2007-2009)
31. Bhardwaj, R.M. (2005) Status of Wastewater generation and treatment in India. Intersecretariat working group on environment statistics (IWG-Env.) Joint work Session on water statistics, Vienna, PP. 20-22.
32. Garg, M (2012) Water pollution in India Causes and remedies. International Journal of Physical and Social science, 2(6), PP. 555-567.
33. Vij, D (2012) Urbanization and Solid waste management in India: Present Practices and futur Challenge. Procedia-Social and Behavioral Sciences, 37, PP. 437-447.
34. Fazal, S (2001) the need for preserving farmland: A Case Study from a predominantly agrarian economy (India). Landscape and Urban Planning, 55(1), PP. 1-13.
35. Davis, K (1965) Urbanization of the human population. Scientific American, 213, pp. 40-53.
36. Rajiv Chopra (2016) Environmental Degradation in India: Causes and Consequences. international Journal of Applied Environmental Sciences, Volume 11, Number 6, PP. 1593-1601.
37. Senugupta, A (2005) Poverty eradication and human rights (Internet). (Cited 2005 Mar 31) Available from: http://www.mindfully.org.
38. Parikh, J and Shukla V (1995) Urbanization, Energy use and greenhouse effect in economic development:- Results from a Cross national study of developing Countries, Global Environmental Change, 5(2), PP. 87-103.